शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2014

लेखन, मूल्य और हम-हशमत

कु.चांदनी गोले (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

'कोई भी अच्छी कलम मूल्यों के लिए लिखती है, मूल्यों के दावेदारों के लिए नहीं।'' कुछ इसी तरह के विचारों को चरितार्थ करने वाली भारत विभाजन पूर्व 18 फरवरी, 1925 में पंजाब में जन्मी सुविख्यात कहानीकार अत्यंत प्रतिष्ठित उपन्यासकार व विशिष्ट शैली के संस्मरण हिन्दी गद्य को प्रदान करने वाली बहुचर्चित लेखिका कृष्णा सोबती कृत संस्मरणात्मक कृति 'हम-हशमत' को प्रस्तुत शोध-पत्र लेखन के विषय के रूप में चयनित किया गया है।

'हम-हशमत' एक लम्बी जीवन चित्र कथा है, जिसमें व्यक्तियों और स्थितियों को अत्यंत जीवंत शैली में मूर्त रूप दिया गया है। एक ओर जहां प्रसिद्ध लेखकों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों के प्रसंगों को शामिल किया गया है, वहीं दूसरी ओर टैक्सी ड्राइवर सरदार जग्गासिंह, खानदानी नानबाई, वेटर आदि जैसे आमजन भी लेखिका की कलम से अछूते नहीं रहे हैं। इसमे दोस्तों के लिए आदर है, जिज्ञासा है, लेकिन जासूसी नहीं। साथ ही यह मानवीय गहनता को छूता है और साहित्य एवं कला में अर्द्धनारीष्वर की रचनात्मक संभावनाओं की ओर भी इंगित करता है। इसके हर चित्र घटना है व हर चेहरा कथा-नायक है। लेखिका की तटस्थता सोच व तेवर विलक्षण रूप से गंभीर है। साथ ही हशमत की जीवन्तता व भाषायी चित्रात्मकता इसे कालजयी बनाती है।

प्रस्तावना

हर लेखक अपने लिए लेखक है। स्वयं के चाहने से वह लेखक है। अगर वह संघर्ष में जूझता है, परिस्थितियों से टक्कर लेता है, तो उसका अहसान किसी दूसरे पर नहीं सिर्फ उसकी अपनी कलम पर है। ''कोई भी अच्छी कलम मूल्यों के लिए लिखती है, मूल्यों के दावेदारों के लिए नहीं।''(1) अगर ऐसा नहीं तो लेखक और कलाकार शामियानों और विज्ञान-भवनों की शोभा बनकर रह जायेंगे। प्रस्तुत शोध पत्र में कृष्णा सोबती कृत संस्मरणात्मक कृति 'हम-हषमत' को लिया गया है, जिसमें उन्होंने मूल्यों की गरिमा को बनाए रखा है, उनका लेखन मूल्यपरक है, मूल्य-केन्द्रित है आत्म-केन्द्रित नहीं। निरन्तर गिरते मानवीय मूल्यों के इस युग में उनका मूल्य परक लेखन वाकई श्लाघनीय है। प्रोफेसर कृष्णनाथ ने मूल्य की परिभाषा देते हुए उपनिषदों का साक्ष्य भी दिया है- 'जो है'' वह तो तथ्य है और ''जो होना चाहिए'' वह मूल्य कहा जाता है। ''जो होना चाहिए'' के लिए उपनिषदों की परिभाषा में दो शब्द आए हैं- 'श्रेय एवं प्रेय'। इसका अर्थ है कि जो श्रेयस्कर हैं, कल्याणकारी है वह भी मूल्य है और जो प्रीतिकर है, रूचिकर है, वह भी मूल्य है। (2)

डॉ.राधाकमल मुखर्जी ने व्यक्ति समाज और मूल्यों में क्रमश: बत्ती, तेल और लौ का सम्बन्ध माना है, जिस प्रकार बिना 'लौ' के प्रकाश की

परख के अभाव में व्यक्ति और समाज का अध्ययन असंभव है। (3)

शांति जोशी की निम्नलिखित परिभाषा मूल्य को बेहद सरल शब्दों में कुछ इस प्रकार परिभाषित करती है कि - ''मूल्य उस सत्य को कह सकते हैं, जिसके लिए व्यक्ति या समाज जीवित रहता है और जिसके लिए आवश्यकता पड़ने पर वहसंघर्ष करने, दुःख सहने तथा मृत्यु को स्वीकार करने के लिए भी तत्पर होता है।'' (4)

लक्ष्मीकांत वर्मा ने कहा है कि- यह हिन्दी के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है कि जब कभी भी कोई बात तीव्र एवं तीक्ष्ण ढंग से कही जाती है, तो लोग बराबर उसका अर्थ व्यक्तिगत राग-द्वेष से जोड़कर उसके महत्व को कम कर देते हैं। बात जो कही गई है- मीठी है, कड़वी है, तेज है या कुंठित है, इसका विश्लेषण तो होने लगता है किन्तु लोग यह प्रश्न उठाना भूल जाते हैं कि बात गलत है या सही है, सप्रमाण है या गैर जिम्मेदार .....सत्य की परख जब घट जाए या उसकी क्षमता न रह जाए और उसके बदले शराफत की दुहाई देकर सत्य का गला दबाने का प्रयास किया जाए तो वह घातक सिद्ध होता है।'' नामवर सिंह जी का मत है कि ''इससे विकास की गति तो धीमी पड़ती ही है, साथ ही मूल्य भी कृत्रिमता का रूप धारण करने लगते हैं।'' (5) इस प्रकार मूल्यों का संरक्षण एक श्रेष्ठ लेखक की पहचान होती है।

संस्मरण साहित्य

कृष्णा सोबती कृत संस्मरणात्मक कृति 'हम-हशमत' पर बात करने से पहले संस्मरण साहित्य पर एक दृष्टि डालना उचित होगा। 'संस्मरण' साहित्य की मुख्य विधा तो नहीं, किन्तु एक अन्य विधा के रूप में बहुचर्चित है। साथ ही आधुनिक हिन्दी गद्य की एक नवीन एवं महत्वपूर्ण विधा के रूप में उभरकर सामने आयी है। सम्+ल्युट् से व्युत्पन्न 'संस्मरण' शब्द का अर्थ है- 'सम्यक्-स्मरण'। एक ऐसी स्मृति जो वर्तमान को अधिक सार्थक, समृद्ध और संवेदनशील बनाती है। संस्मरण मूलतः अतीत और वर्तमान के बीच एक 'सेतु' है। 'समय-सरिता' के दो तटों के बीच संवाद का माध्यम है 'संस्मरण'। (6)

डॉ.रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में- ''संस्मरण किसी स्मर्यमाण की स्मृति का शब्दांकन है। स्मर्यमाण के जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ और वे चारित्रिक विशेषताएं, जो स्मरणकर्ता को स्मृत रह जाती हैं, उन्हें वह शब्दांकित करता है। स्मरण वही रह जाता है, जो महत, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय हो। स्मरर्यमाण को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है।'' (7)

यद्यपि हिन्दी में संस्मरण- लेखन का सिलसिला बीसवीं सदी के तीसरे दशक से ही शुरू हो चुका था तथापि एक विधा के रूप में इसने पाँचवे दशक में पहचान पायी। हिन्दी में संस्मरण का आरंभ 'सुधा', 'विशाल-भारत', 'सरस्वती' और 'माधुरी' आदि पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ प्रथम संस्मरण लेख में पद्मसिंह शर्मा का नाम उल्लेखनीय है, जिनकी संस्मरणात्मक-पुस्तक 'पद्म-पराग' सन् 1929 में प्रकाश में आयी और अत्यधिक प्रसिद्ध हुई। संस्मरण-लेखकों में बनारसी दास चतुर्वेदी (हमारे आराध्य) का नाम बडे ही आदरपूर्वक लिया जाता है और महादेवी वर्मा (स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी) को तो इस क्षेत्र में महारत हासिल थी। संस्मरण लेखकों में महावीर प्रसाद द्विवेदी (अनुमोदन का अन्त, सभा की सभ्यता) कन्हैयालाल विष्णु प्रभाकर (ज़िन्दगी मुस्कराई, दीप जले शंख बजे, माटी हो

गई सोना), देवेन्द्र सत्यार्थी (क्या गौरी क्या सांवरी, कला के हस्ताक्षर), श्रीराम शर्मा (प्राणों का सौदा, जंगल के जीव, वे जीते कैसे?), रामवृक्ष बेनीपुरी, (माटी की मूरतें, गेंहू और गुलाब, मील के पत्थर), राहुल सांकृत्यायन (बचपन की स्मृतियाँ जिनका मैं कृतज्ञ हूँ), विष्णु प्रभाकर (जान-अनजाने, कुछ शब्द कुछ रेखाएँ), कृष्णा सोबती ('हम-हशमत), अमृतलाल नगर (जिनके साथ जिया), उपेन्द्र नाथ अश्क (मंटो मेरा दुश्मन, ज्यादा अपनी कम पराई), डॉ.नगेन्द्र (चेतना के बिम्ब), डॉ.राम कुमार वर्मा (संस्मरणों के सुमन), मोहन राकेश (परिवेश)

आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। (8)

कृष्णा सोबती: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

भारत-विभाजन के पूर्व 18 फरवरी, 1925 में पंजाब में जन्मी सुविख्यात कहानीकार, अत्यंत प्रतिष्ठित उपन्यासकार व विशिष्ट शैली के संस्मरण हिन्दी गद्य को प्रदान करने वाली बहुचर्चित लेखिका कृष्णा सोबती को साहित्य जगत में एक अद्‌वितीय स्थान प्राप्त है। भारतीय साहित्य के परिदृष्य पर हिन्दी की विश्वसनीय उपस्थिति के साथ कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिये जानी जाती हैं। कम लिखने को वे अपना परिचय मानती है। उनका 'कम लिखना' दरअसल 'विशिष्ट लिखना' है। कृष्णा सोबती ने अपनी लंबी साहित्यक यात्रा में हर नई कृति के साथ अपनी क्षमताओं का अतिक्रमण किया है। 'निकष' में विशेष कृति के रूप में प्रकाशित डार से बिछुड़ी से लेकर मित्रों मरजानी, यारों के यार, तीन पहाड़, बादलों के घेरे, 'हम-हशमत' जिन्दगी नामा, ऐ लड़की, दिलो दानिश और समय सरगम तक ने जो बौद्धिक उत्तेजना आलोचनात्मक-विमर्श, सामाजिक और नैतिक बहसें साहित्य संसार में पैदा की है। उनकी अनुगूंज पाठकों में बराकर बनी रही है। (9) 1980 में कृष्णा सोबती को जिन्दगीनामा उपन्यास के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार व 1981 में पंजाब सरकार के साहित्य शिरोमणी पुरस्कार से सम्मानित गया।

'हम-हशमत'

कृष्णा सोबती कृत बहुचर्चित संस्मरणात्मक कृति 'हम-हशमत' संस्मरण साहित्य में अपना अविस्मरणीय स्थान रखती हैं। 'हम-हशमत' एक लंबी जीवन चित्र कथा है जिसमें व्यक्तियों और स्थितियों को अत्यंत जीवंत शैली में मूर्त रूप दिया गया है। इसमें प्रसिद्ध लेखकों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों को तो शामिल किया ही गया है, वहीं टैक्सी ड्राईवर जग्गासिंह, खानदानी नानबाई मियां नसीरूद्दीन और वेटर जैसे आमजन भी अछूते नहीं रहे हैं।

'हम-हशमत' के अब तक तीन भाग आ चुके हैं, जिसका प्रथम भाग निर्मल वर्मा के संस्मरण से शुरू होकर रमेष पटेरिया, भीष्म साहनी, मियां नसीरूद्दीन, कृष्ण बलदेव वैद, सरदार जग्गासिंह, शीला सधू, युवराजसिंह,

अमजद भट्टी, महेन्द्र भल्ला, रतीकांत झा, खान गुलाम अहमद, नितिन सेठी, गोविन्द्र मिश्र, मनोहर श्याम जोशी से मुलाकात शामिल है और हशमत से भी मुलाकात का एक प्रसंग अंत में है। 'हम-हशमत' की तटस्थता, सोच व तेवर विलक्षण रूप से गंभीर है, इसमें संदेह नहीं। इसमें कहीं व्यग्य कहीं तीखे स्वर में सत्य का उद्‌घाटन, सहज रूप में दृष्टिगोचर होता है। हम हषमत में सच झूठ, आलोचना के गिरते स्तर, लेन-देन, लेखकीय गरीमा, प्रकाषन जगत की खूबियों-खामियों व अभिजात्यवादी जीवन के खोखलेपन के साथ-साथ केवल चरित्रों का खाका भर नहीं खींचा गया है, अपितु मानवीय मूल्यों

और जन साधारण के सरोकार की पहचान भी चित्रित की गई है।

आज भी अनेक विचारक मानते हैं कि मनुष्य के सामने एक बडी समस्या यह है कि वह नये ओर प्रासंगिक मूल्यों का अनुसंधान करें और जीवन के तथ्यों या वास्तविकताओं के साथ उनका तालमेल स्थापित करें। मानव जीवन के लक्ष्य से सीधा और प्रत्यक्ष संबंध होने के कारण मूल्यों की चर्चा और मीमांसा विश्व चिंतन का अंग बनी रही है। डॉ.मैत्र ने एक स्थान पर संकेत किया है कि ''भारतीय अध्ययन परम्परा मूल्य परख रही है, हमारी परम्परा है मूल्य-केन्द्रित होना न कि अस्तित्व-केन्द्रित होना।''(10)

''इण्टलेक्चुअल तल पर दर्जा-ब-दर्जा उड़ानों या गहराइयों में खो जाने के साथ जिन्दगी से हट जाना, प्रतिभा के बल पर अपने को विभाजित कर लेना, अपने पर खुद लीक लगाकर समाज से कट जाना किसी भी लेखक के लिए यह विभाजन से बड़ी ट्रेजडी है।'''(11) 'हम-हशमत' में नानबाई मियाँ नसीरूद्दीन का प्रसंग बड़ा ही जीवंत व रोचक बन पड़ा है। छप्पन प्रकार की रोटियाँ बनाने के मशहूर खानदानी नानबाई का यह जीवन्त चित्र है। नानबाई मियाँ नसीरूद्दीन का ग़म उसके समय की रफ्तार में उसके हुनर के कद्रदानों के गुजर जाने से जुड़ा है। एक प्रसंग इस बात का जिक्र कुछ इस प्रकार हुआ है कि मियाँ नसीरूद्दीन ने एक लम्बी सांस भरी और किसी गुमषुदा याद को ताजा करते हुए कहा - ''उतर गये वे जमाने और गये वे कद्रदान जो पकाने खाने की कद्र जानते थे। मियाँ अब क्या रखा है ...निकाली तन्दूर से ...निगली और हजम।''(12)

'हम-हशमत' में एक और कद्रदानों के गुजर जाने का ग़म है, वहीं दूसरी और राजनीतिक क्षेत्र के समर्थ को भी उजागर करने का प्रयास किया गया है, जो आज भी पूर्णतः सन्दर्भित और प्रासंगिक है। एक स्थान पर टैक्सी ड्राइवर सरदार जग्गासिंह से 'हषमत' के पूछने पर कि ''सरदारजी पार्टियों के बारे में आपका क्या खयाल है ?'' तो सरदार जी जबाव में कहते हैं - ''जी, हम मजदूरी को इन पार्टियों से क्या लेना-देना ? हाँ, अप्पन इतना जरूर कहेंगे कि जिस पार्टी के पास जितने दुराचारी होंगे और जितने ज्यादा पैसे होंगे, उतने ही चांस उस पार्टी के जीतने के होंगे।'' (13)

इसी के साथ 'हशमत' के सरदार जग्गासिंह से संवाद में नई धनाढ्य पीढ़ी और उसके आचरण का वर्णन अत्यंत रोचक बन पड़ा है। एक स्थान पर टेक्सी ड्राइवर सरदार जग्गासिंह से हषमत द्वारा यह पूछने पर कि ''पढ़ने-लिखने वाले लड़के-लड़कियों के बारें में आप क्या सोचते हैं ? तब जवाब में सरदार जी कहते हैं कि - ''सच पूछों तो हमारे पास इनके प्रोग्रामों की 'हैण्ड-फस्ट' खबरें रहती है। जी, इनके मौज-मजे ज्यादा और पढ़ाई-लिखाई कम। शुगल चंगा है। अजी क्या पूछते हो ! किसी की टिकट बुक है कोई पिक्चर भागा जा रहा है,- कोई लड़की को चाय पिलाने ले जा रहा है, तो कोई किसी को होस्टल में मिलने जा रहा है। पर, सच पूछो तो आजकल अच्छी पढ़ाई-लिखाई भी अमीरों के ही चोंचले है।''(14) इस प्रकार आज की युवा पीढ़ी जिसे देश का भविष्य कहा जाता है वह किस ओर जा रही है इस बात से शायद वह खुद भी अनभिज्ञ है। अतः हशमत द्वारा नव पीढ़ी को लेकर किया गया कटाक्ष आज भी सन्दर्भित है और युवा-पीढ़ी को सोचने पर विवश करता है। 'हम हशमत' द्वारा उल्लेखित प्रसंग ''ख्वाब भी देखा तो ऐसा'' में बसे स्टैण्ड, बस, बस कंडक्टर आदि को केन्द्र

में रखकर अव्यवस्थित परिवहन-व्यवस्था के भी रोचक चित्र उभरकर सामने आए हैं। 'इंकलाब ख्वाब नही' संस्मरण में भारतीय लोकतंत्र की सबसे छोटी किन्तु महत्वपूर्ण इकाई पंचायत की वर्तमान स्थिति को उजागर किया गया है और इसमें पंचायत और गांव की परिवर्तित स्थितियों का चित्रण हुआ है। साथ ही ग्रामीण स्तर पर दलितों का अपनी अस्मिता को लेकर जागरण व जनसामान्य में जागरूकता की लहर भी देखी जा सकती है। (15) 'एक शाम' शीर्षक संस्मरण में एक स्थान पर 'हशमत' हिन्दुस्तानियों की स्वार्थ - भावना पर भी व्यंग्य बाण छोड़ता है। जैसे - 'हशमत' क्रान्तिकारी लेखकों को मन ही मन दुआएँ दिया करते हैं (याद रखिए, बिना मतलब आज का हिन्दुस्तानी न केवल किसी को दुआएँ देता है न किसी की तारीफ करता है) हमारा भी इसमें स्वार्थ है क्योंकि इन क्रान्तिकारी लेखकों के पास गाडियां है और दावतों में पहुँचने के लिए 'हशमत' इन गाड़ी वाले दोस्तों के पीछे हो लेते हैं। यह बात आज भी पूर्णतः प्रासंगिक है क्योंकि आज का मनुष्य अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर सच को झूठ और सफेद को काला बताने मे कतई पीछे नहीं हटता।

भाषा शैली

किसी कवि या लेखक की कृति की भाषा का अध्ययन अनेक दृष्टियों से होता है। भाषा की शक्ति निर्भर है शब्द भंडार, शब्द-चयन और अर्थ-शक्ति पर। इसलिए कवि या लेखक की अभिव्यंजना शक्ति को जानने के लिए उसकी भाषा का अध्ययन करना आवश्यक होता है। (17) किसी भी युग में किसी भी भाषा में एक-दो लेखक ही ऐसे होते हैं, जिनकी रचनाएँ साहित्य और समाज में घटना की तरह प्रकट होती है और अपनी भावात्मक ऊर्जा और कलात्मक उत्तेजना के लिए एक प्रबुद्ध पाठक वर्ग को लगातार आश्वस्त करती है। जिनमें से कृष्णा सोबती को भी कुछ इस तरह का स्थान प्राप्त है। कृष्णा सोबती ने हिन्दी की कथा - भाषा को एक विलक्षण ताजगी दी है। उनके भाषा- संस्कार के घनत्व, जीवन्त प्रांजलता और सम्प्रेषण में हमारे समय के अनेक पेचीदा सच उजागर किए हैं। (18) 'चित्रात्मकता' व 'जीवन्तता' उनकी भाषा की प्रमुख विषेषता है और प्रसंगानुकूल, पात्रानुकूल व वातावरण के अनुकूल भाषा से उनके भाषा पर अधिकार का परिचय मिलता है। हिन्दी के साथ-साथ ऊर्दू, अंग्रेजी व पंजाबी-पन से भी उनकी भाषा समृद्ध रही है। शैली में प्रवाहपूर्णता, रोचकता, तटस्थता, तेवर से विलक्षणता आ गई है। इस प्रकार 'हम-हशमत' भाषा व शैली दोनों दृष्टियों से भी पूर्णतः सफल परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में कहा जा सकता है कि - कृष्णा सोबती कृत 'हम-हशमत' सस्मरण साहित्य में तो अपना अद्‌वितीय स्थान रखता है, साथ ही अपनी मूल्यपरकता व प्रासंगिकता से परिपूर्ण होने के कारण संपूर्ण हिन्दी साहित्य की भी एक अमूल्य निधि बन गया है। क्योंकि निरन्तर गिरते मूल्यों के इस युग में इस प्रकार का 'मूल्य-केन्द्रित' व 'यथार्थवादी लेखन' आज की महती आवश्यकता है। कृष्णा सोबती के रचना संसार की गहरी सघन ऐन्द्रियता, तराश और लेखकीय अस्मिता ने एक बड़े पाठक वर्ग को अपनी ओर आकृष्ट किया है। निश्चय ही कृष्णा सोबती ने हिन्दी के आधुनिक-लेखन के प्रति पाठकों में एक नया भरोसा पैदा किया है। अपने समकालीनों और आगे की पीढ़ियों को मानवीय स्वातंत्र और नैतिक उन्मुक्तता के लिए प्रभावित और प्रेरित किया है। निज के प्रति सचेत और

समाज के प्रति चैतन्य किया है। कृष्णा सोबती की कृति 'हम-हशमत' हिन्दी साहित्य के लिए एक वरदान है और इसीलिए वह नींव का पत्थर साबित हुई।

संदर्भ ग्रन्थ

1.हम हशमत भाग एक: कृष्णा सोबती पृष्ठ 9
2.हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण: वेदप्रकाश अमिताभ पृष्ठ-25.
3.हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण: वेदप्रकाश अमिताभ पृष्ठ 29
4.हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण: वेदप्रकाश अमिताभ पृष्ठ 32
5.कविता के नये प्रतिमान: डॉ नामवर सिंह पृष्ठ -216
6.आलोचना, त्रैमासिक: डॉ.नामवर सिंह पृष्ठ 350
7.हिन्दी का गद्य साहित्य: डॉ.रामचन्द्र तिवारी पृष्ठ 397
8.आलोचना त्रैमासिक: डॉ.नामवर सिंह पृष्ठ 350-51
9.मित्रों मरजानी: कृष्णा सोबती पृष्ठ 1
10.हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण: वेदप्रकाश अमिताभ पृष्ठ 23
11.हम-हशमत भाग एक: कृष्णा सोबती पृष्ठ 30-31
12.हम-हशमत भाग एक: कृष्णा सोबती पृष्ठ 37
13.हम-हशमत भाग एक: कृष्णा सोबती पृष्ठ 62
14.हम-हशमत भाग एक: कृष्णा सोबती पृष्ठ 62
15.आलोचना त्रैमासिक: डॉ.नामवर सिंह पृष्ठ 129-30
16. हम-हशमत कृष्णा सोबती पृष्ठ 147
17. तुलसी की भाषा: डॉ.भगवतीप्रसाद सिंह पृष्ठ 5
18.यारों के यार: कृष्णा सोबती पृष्ठ - आवरण पृष्ठ